53/4

कल्पद्रुम तंत्र में वर्णित

श्री गोरक्ष सहस्र नाम

प्रकाशक :

बावा मंगल नाथ

स्थान बावा पूर्ण, बख्शी नगर, जम्मू तवी ।

गोरक्षसहस्रनाम

ॐ श्री गणेशाय नमः ।

ॐ श्री गुरुभ्यो नमः ।

ॐ देवाश्च मुनयः सर्वे पप्रच्छुर्धर्मवादिनः ।

देवदेवं महादेवं गोरक्षनाथकीर्तनम् ॥१॥

धर्म की चर्चा करने वाले देवों तथा मुनियों ने, देवों के देव महादेव से, गोरखनाथ के विषय में पूछा ॥१॥

कोऽसौ गोरक्षनाथो वै तपस्वी जटिसंज्ञकः ।

कथं जातो महाबुद्धिरेतद् ब्रूहि सुविस्तरम् ॥२॥

(कि) वह जटी (जटाओं वाला) तपस्वी गोरख कौन है ? उस महाबुद्धि का जन्म कैसे हुआ ? विस्तार से कहें ॥२॥

श्री महादेव उवाच

अस्ति दक्षिणस्यां दिशि कश्चिद् वेशेक संज्ञकः

तत्र जातो महाबुद्धिर्महामंत्र-प्रसादतः ॥३॥

दक्षिण दिशा में वेशेक नामक प्रदेश में, महामंत्र के प्रसाद से उस महाबुद्धि (गोरखनाथ) का जन्म हुआ ॥३॥

गुरुसकाशान्मंत्रं वै गृहीत्वा विधिपूर्वकम् ।

तस्यानुष्ठानमात्रेण जाता ख्यातिर्महीतले ॥४॥

उस गोरखनाथ ने गुरु से विधि-पूर्वक मंत्र ग्रहण किया (अर्थात् दीक्षा ली)। उस मंत्र के अनुष्ठान-मात्र से धरती पर उसकी कीर्ति फैल गई ॥४॥

पुरा देवाश्च कैलाशे देवदेवं जगद्गुरुम् ।
सृष्टि-स्थित्यन्त-कर्त्तारं गोरक्षं सत्यसंस्थितम् ॥५॥

(इस प्रकार) एक समय, कैलाश पर्वत पर, देवों ने देवाधिदेव जगद्गुरु तथा सृष्टि रचने, उसका पोषण करने तथा उसका संहार करने वाले (महादेव) से, सत्यसन्ध गोरख (के विषय में जिज्ञासा की) ॥५॥

श्री कृष्ण ने गर्ग मुनि से पूछा

गोरक्षनाथः को देवः को मंत्रस्तस्य पूजने ।
सेव्यते केन विधिना तत्सर्वं ब्रूहि मे मुने ॥६॥

हे मुनि, गोरखनाथ देव कौन हैं ? उनके पूजन के लिए मंत्र क्या है ? उनकी आराधना कैसे की जाए ? यह सब हमें बतलाइये ॥६॥

गर्ग बोले

शृणु देवकथाः सर्वा गोरक्षस्य विधि-क्रियाः ।
गोरक्षं च हृदि ध्यात्वा योगीन्द्रो भविता नरः ॥७॥

गोरखनाथ की समस्त कथा तथा पूजा-विधि सुनिये । गोरखनाथ का, हृदय में ध्यान करके मनुष्य योगीन्द्र बन जाएगा ॥७॥

विना गोरक्षमंत्रेण योगसिद्धिर्न जायते ।
गोरक्षस्यप्रसादेन सर्वसिद्धिर्न संशयः ॥८॥

गोरखनाथ के मंत्र के (जाने) विना योगसिद्धि नहीं हो सकती। तथा गोरखनाथ की कृपा होने से सर्वसिद्धि होगी, इसमें संदेह नहीं ॥८॥

श्रीकृष्ण उवाच

विधिना केन मंत्रस्य कर्तव्यं साधनं मुने ।
को विधिः किं फलं तस्य न्यासं ध्यानं कथं भवेत् ॥९॥

हे मुनि, उस मंत्र का साधन किस विधि से करना चाहिये ? उसकी विधि क्या है तथा उसका फल क्या है ? उस (मंत्र) का 'न्यास' तथा 'ध्यान' कैसे होगा ॥९॥

तत्सर्वं ब्रूहि मे विप्र, कथं सिद्धिर्भविष्यति ।
किं फलं लभते न्यासात्, किं फलं पूजनेन च ॥१०॥

हे मुनि, मुझे यह सब कहो कि सिद्धि कैसे होगी ? न्यास से क्या फल मिलेगा तथा पूजन से क्या फल होगा ॥१०॥

एतत्सर्वं समाख्यातं ब्रूहि सर्वं तपोधन ।
तव प्रसादेन ज्ञाता स्यात् कीर्तिस्तस्य महात्मनः ॥११॥

हे तपोधन इन सभी जिज्ञासाओं का समाधान करें। आपके अनुग्रह से ही मैं उस महात्मा की कीर्ति को जान सकूंगा ॥११॥

गर्ग उवाच

शृणु त्वं जानकीनाथ विधिपूर्वकजां क्रियाम् ।
गुह्यातिगुह्य मंत्रस्य वेदस्यागमनं विधिः ॥१२॥

हे जानकीनाथ, विधिपूर्वक की जाने योग्य इस क्रिया को सुनिये, जिस में अत्यन्त गोपनीय मंत्र वाले इस ज्ञान को जानने की विधि निहित है ॥१२॥

ॐ अस्य श्री गोरक्षनाथस्तोत्रमंत्रस्य बृहदारण्यः ऋषिः। अनुष्टुपः छन्दः। श्री गोरक्षनाथो देवता, गों बीजं, विमला शक्तिः। हंसेति कीलकं। निरंजनात्मकं सर्वम्। स्वसिद्धयर्थे जपे विनियोगः॥

अथ न्यासं प्रवक्ष्यामि शृणु देव जनार्दन।
आदौ न्यास-विधिं कृत्वा पश्चात्पूजां समाचरेत् ॥१३॥

पहले न्यास-विधि करके, फिर पूजा करे।

प्रथमं तु दिशां न्यासं, द्वितीयं काय-शोधनम्।
तृतीयमंगन्यासं च साक्षात्कुर्यान्न संशयः॥ १४॥

पहले दिशा-न्यास करे, फिर देह-शुद्धि करने के लिए अंग-न्यास करे। ये सभी क्रियाएं करके साधक को साक्षात् फल-सिद्धि होगी। इसमें सन्देह नहीं।

गोरक्षस्य प्रसादेन मंत्रसिद्धिर्नृणां क्षितौ।
धन-सन्तानवृद्धिश्च भवेत्सत्यं वदाम्यहम् ॥ १५ ॥

पृथ्वी पर गोरख की कृपा से मानवों को मंत्र-सिद्धि होगी तथा धन और सन्तान में वृद्धि होगी। मैं सत्य कहता हूँ।

आदौ हि चासनं कृत्वा पश्चाद्दृग्बन्धनं तथा।
वारत्रयं ततः पश्चात् न्यासं च विधि-पूर्वकम् ॥१६॥

पहले आसन लगा कर बैठना, फिर आंखें बन्द कर लेना, उसके बाद विधि-पूर्वक तीन बार अंगन्यास करना।

ॐ ह्रीं श्रीं गों गोरक्षनाथ पूर्वदिक्पालमारभ्य हूँ फट् स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रीं गों गोरक्षनाथ आग्नेयदिक्पालमारभ्य हूँ फट् स्वाहा ॥ १७ ॥
ओं ह्रीं श्रीं गों गोरक्षनाथ दक्षिण-दिक्पालमारभ्य हूं फट् स्वाहा।
ओं ह्रीं श्रीं गों गोरक्षनाथ नैऋत्य-दिक्पालमारभ्य हूँ फट् स्वाहा ॥ १८ ॥
ओं ह्रीं श्रीं गों गोरक्षनाथ पश्चिम-दिक्पालमारभ्य हूँ फट् स्वाहा।
ओं ह्रीं श्रीं गों गोरक्षनाथ वायव्य-दिक्पालमारभ्य हूँ फट् स्वाहा ॥ १९ ॥
ओं ह्रीं श्रीं गीं गोरक्षनाथ उत्तर-दिक्पालमारभ्य हूँ फट् स्वाहा।
ओं ह्रीं श्रीं गों गोरक्षनाथ ईशान-दिक्पालमारभ्य हूँ फट् स्वाहा ॥ २० ॥
ओं ह्रीं श्रीं गों गोरक्षनाथ अधो-दिक्पालमारभ्य हूँ फट् स्वाहा।
ओं ह्रीं श्रीं गों गोरक्षनाथ ऊर्ध्व-दिक्पालमारभ्य हूँ फट् स्वाहा ॥ २१ ॥
ओं ह्रीं श्रीं गों गोरक्षनाथ करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः।
ओं ह्रीं श्रीं गों गोरक्षनाथ अस्थिनिवासाभ्यां नमः ॥ २२ ॥
ओं ह्रीं श्रीं गों गोरक्षनाथ नासिका-शिरोभ्यां नमः।
ओं ह्रीं श्रीं गों गोरक्षनाथ मुखोष्ठाभ्यां नमः ॥ २३ ॥

अथ करन्यासः

ओं ह्रीं श्रीं गों गोरक्षनाथ अंगुष्ठाभ्यां नमः।
ओं ह्रीं श्रीं गों गोरक्षनाथ तर्जनीभ्यां नमः ॥ २४ ॥
ओं ह्रीं श्रीं गों गोरक्षनाथ मध्यमाभ्यां नमः।
ओं ह्रीं श्रीं गों गोरक्षनाथ अनामिकाभ्यां नमः ॥ २५ ॥
ओं ह्रीं श्रीं गों गोरक्षनाथ कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ओं ह्रीं श्रीं गों गोरक्षनाथ पंचांगुलिनखेभ्यो नमः ॥ २६ ॥
ओं ह्रीं श्रीं गों गोरक्षनाथ बाहुमूलाभ्यां नमः ।
ओं ह्रीं श्रीं गों गोरक्षनाथ मणिवन्धाभ्यां नमः ॥ २७ ॥
ओं ह्रीं श्रीं गों गोरक्षनाथ चिबुक-जानुभ्यो नमः ।
ओं ह्रीं श्रीं गों गोरक्षनाथ बाहुकवचाभ्यां नमः ॥ २८ ॥
ओं ह्रीं श्रीं गों गोरक्षनाथ करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।
ओं ह्रीं श्रीं गों करतल-सर्वसन्धिभ्यो नमः ॥ २९ ॥

[इति करन्यासः]

अथ वक्रन्यासः

ओं ह्रीं श्रीं गों गोरक्षनाथ कपाल-ब्रह्मांडाभ्यां नमः ।
ओं ह्रीं श्रीं गों गोरक्षनाथ ललाटभालाभ्यां नमः ॥ ३० ॥
ओं ह्रीं श्रीं गों गोरक्षनाथ नेत्राभ्यां नमः ।
ओं ह्रीं श्रीं गों गोरक्षनाथ अक्षिप्रतिपरिक्षेपाभ्यां नमः ॥ ३१ ॥
ओं ह्रीं श्रीं गों गोरक्षनाथ श्रोत्रपुटाभ्यां नमः ।
ओं ह्रीं श्रीं गों गोरक्षनाथ नासिका-गुल्फाभ्यां नमः ॥ ३२ ॥
ओं ह्रीं श्रीं गों गोरक्षनाथ मुख-जिह्वाभ्यां नमः ।
ओं ह्रीं श्रीं गों गोरक्षनाथ दन्तोष्ठाभ्यां नमः ॥ ३३ ॥
ओं ह्रीं श्रीं गों गोरक्षनाथ कंठ-तालुभ्यां नमः ।
ओं ह्रीं श्रीं गों गोरक्षनाथ ग्रीवा-कंठाभ्यां नमः ॥ ३४ ॥
ओं ह्रीं श्रीं गों गोरक्षनाथ गुदा-मूर्द्धभ्यां नमः ।
ओं ह्रीं श्रीं गों गोरक्षनाथ समवक्रसर्वसन्धिभ्यो नमः ॥ ३५ ॥
ओं ह्रीं श्रीं गों गोरक्षनाथ करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ३६ ॥

[इति वक्रन्यासः]

अथ पादुका न्यासः

ओं ह्रीं श्रीं गों गोरक्षनाथ अंगुष्ठाभ्यां नमः ।
ओं ह्रीं श्रीं गों गोरक्षनाथ तर्जनीभ्यां नमः ॥ ३७ ॥
ओं ह्रीं श्रीं गों गोरक्षनाथ मध्यमाभ्यां नमः ।
ओं ह्रीं श्रीं गों गोरक्षनाथ अनामिकाभ्यां नमः ॥ ३८ ॥
ओं ह्रीं श्रीं गों गोरक्षनाथ कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।
ओं ह्रीं श्रीं गों गोरक्षनाथ करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ३९ ॥
ओं ह्रीं श्रीं गों गोरक्षनाथ पादकूर्चाभ्यां नमः ।
ओं ह्रीं श्रीं गों गोरक्षनाथ पादस्थलाभ्यां नमः ॥ ४० ॥
ओं ह्रीं श्रीं गों गोरक्षनाथ पादमूलाभ्यां नमः ।
ओं ह्रीं श्रीं गों गोरक्षनाथ पाद-सन्धिजंघाभ्यां नमः ॥ ४१ ॥
ओं ह्रीं श्रीं गों गोरक्षनाथ सर्वांगसन्धिभ्यो नमः ।
ओं ह्रीं श्रीं गों गोरक्षनाथ करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ४२ ॥

[इति पादुका न्यासः]

अथ देह-न्यासः

ॐ ह्रीं श्रीं गों गोरक्षनाथ गुह्य सर्वांग सर्व-सन्धि सर्वांगरोमेभ्यो नमः ॥ ४३ ॥
ॐ ह्रीं श्रीं गों गोरक्षनाथ नव नाडि सप्तति कोष्ठ, द्विसहस्र नाडि, इड़ा पिंगला सुषुम्ना नाडि, पंचप्राण पुरुषेभ्यो नमः ॥ ४४ ॥
ॐ ह्रीं श्रीं गों गोरक्षनाथ गुह्येन्द्रिय-मुख - नासिका-चक्षुकर्ण-ब्रह्माण्ड दशद्वारेभ्यो नमः ॥ ४५ ॥
ॐ ह्रीं श्रीं गों गोरक्षनाथ करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।
ॐ ह्रीं श्रीं गों गोरक्षनाथ करपल्लवाभ्यां नमः ॥ ४६ ॥
ॐ ह्रीं श्रीं गों गोरक्षनाथ अर्द्धपल्लवाभ्यां नमः ।

ॐ ह्रीं श्रीं गों गोरक्षनाथ ऊर्ध्वपल्लवाभ्यां नमः ॥ ४७ ॥
ॐ ह्रीं श्रीं गों गोरक्षनाथ नाभ्यै नमः ।
ॐ ह्रीं श्रीं गों गोरक्षनाथ हृदयाय नमः ॥ ४८ ॥
ॐ ह्रीं श्रीं गों गोरक्षनाथ शिरसे स्वाहा ।
ॐ ह्रीं श्रीं गों गोरक्षनाथ शिखायै वषट् ॥ ४९ ॥
ॐ ह्रीं श्रीं गों गोरक्षनाथ नेत्रत्रयाय वौषट् ।
ॐ ह्रीं श्रीं गों गोरक्षनाथ कवचाय हुँ ॥ ५० ॥
ॐ ह्रीं श्रीं गों गोरक्षनाथ, सर्वविद्यापतये तुभ्यं नमः ॥ ५१ ॥

[इति पंचांग न्यासः]

अथ ध्यानम्

ॐ प्रवक्ष्यामि महाध्यानं शृणु देव जनार्दन ।
पूर्व न्यासविधिं कृत्वा पश्चात् ध्यानं समाचरेत् ॥५२॥

हे देव जनार्दन, अब महाध्यान की चर्चा करता हूँ, सुनिये। न्यास-विधि के पश्चात् ध्यान करे ॥५२॥

शुद्ध स्फटिक संकाशं जटाजूटं त्रिलोचनम् ।
निरंजनं निराकारं निर्विकल्पं निरामयम् ॥ ५३ ॥

(जिनकी देह) शुद्ध बिल्लौर सदृश है, जटाजूट से सुशोभित, त्रिनेत्र, निरंजन, निराकार, निर्विकल्प तथा निर्विकार ॥५३॥

त्रिमूर्तिं च त्रिलोकेशं विधिं विष्णुं महेश्वरम् ।
विश्वरूपं निराकारं गोरक्षनाथ-दैवतम् ॥ ५४ ॥

ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश के रूप में जो त्रिमूर्ति हैं, जो तीनों भुवनों के स्वामी हैं, जो निराकार होकर भी विश्वरूप हैं, ऐसे गोरखनाथ प्रभु (का ध्यान करता हूं) ॥५४॥

एवं ध्यात्वा जपेत्सिद्धिर्गोरक्षस्य प्रसादतः ।
नियमेन साधकानां भविष्यति न संशयः ॥ ५५ ॥

इस प्रकार ध्यान करके नियमपूर्वक जप करे (तो) गोरख की कृपा से साधकों को सिद्धि-लाभ होगा, इसमें सन्देह नहीं ॥५५॥

अथ मंत्रं प्रवक्ष्यामि, शृणु त्वं यदुनन्दन !
श्री कल्पद्रुम-तंत्रेषु ये मंत्राः कथिताः पुरा ॥५६॥

अब मैं मंत्र के विषय में कहता हूँ, हे यदुनन्दन, तुम सुनो। श्री कल्पद्रुमतंत्रों में पूर्व ही जो मंत्र कहे गए हैं— ॥५६॥

जपन्ति साधका धीरास्तान्मंत्रान् श्रद्धयान्विताः ।
शीघ्रं भवति सिद्धिर्वै साधकानां शिवाज्ञया ॥५७॥

जो धैर्यवान् साधक, श्रद्धा-युक्त होकर, इन मंत्रों का जाप करते हैं, शिव की आज्ञा से उन साधकों को शीघ्र ही सिद्धि-लाभ होता है ॥५७॥

गोरक्षनाथमंत्राणां प्रभावो वर्णितः पुरा ।
कल्पद्रुमादितंत्रेषु गर्गादिमुनिभिः कलौ ॥५८॥

कलियुग में गर्ग आदि मुनियों ने 'कल्पद्रुम' तन्त्रों में गोरखनाथ मंत्रों के प्रभाव का वर्णन किया है।

ॐ ह्रीं श्रीं गों गोरक्षवीजाय धीमहि ।
तन्नो गोरक्ष निरंजनः प्रचोदयात् ॥५९॥
ॐ ह्रीं श्रीं हुं फट् स्वाहा,
ॐ ह्रीं श्रीं गों गोरक्ष हुं फट् स्वाहा
ॐ ह्रीं श्रीं गों गोरक्षदेहं निरंजनात्मने हुं फट् स्वाहा ॥६०॥

शतोत्तरलक्ष्यं जप्त्वा यः साधकः शुद्धमानसः ।
साधयेत् सर्वकार्याणि नात्र कार्या विचारणा ॥६१॥

जो साधक शुद्धमन से इस मंत्र का एक लाख एक सौ बार जाप करेगा वह सभी कामों में सिद्धि पाएगा। इस विषय में किसी तरह का वितर्क नहीं करना चाहिए ॥६१॥

धारयते नरो नित्यं मंत्रराजं विशेषतः ।
स योग-सिद्धिमाप्नोति गोरक्षस्य प्रसादतः ॥६२॥

जो नर, विशेष रूप से, इस मंत्र-राज को धारण करता है, वह गोरख की कृपा से योग-सिद्धि प्राप्त करता है ॥६२॥

अथ श्री गुरु गोरक्षनाथ सहस्रनाम लिख्यते

गोसेवी गोरक्ष - गोप्ता गायत्रीधर - संभवः ।
गोबिन्दो गोप्तानन्दो गोबिन्दपदसेवकः ॥६३॥
योगीन्द्रः सिद्धिदाता च योगीन्द्रनाथ स उच्यते ।
यतिश्च धार्मिको धीरो योगीनाथो दिगम्बरः ॥६४॥
योगानन्दो योगचरो योगवेत्ता यतिप्रियः ।
योगराशिसमाधिस्तु योगज्ञानैकभाजनः ॥६५॥
योगमार्गयुतो दाता ब्रह्मचारी बृहत्तपाः ।
शंकरौक - स्वरूपश्च शंकरध्यान - तत्परः ॥६६॥
योगानन्दो योगधारी योगज्ञो योगभूषितः ।
योगयुक्तो योगधारी योगज्ञान-समन्वितः ॥६७॥
योगचारी योगकर्त्ता युक्ताहारसमन्वितः ।
नागहारो नागरूपी नागमालाविभूषणः ॥६८॥

नागधारी नागशोभी नानावर्णविभूषितः ।
नानावेश - समायुक्तो नानारूपो निरंजनः ॥३९॥
आदिनाथः सोमनाथः सिद्धिनाथो मनोहरः ।
नाथनाथो महानाथो सर्वनाथो निरत्ययः ॥७०॥
क्षेत्रनाथो बटुकनाथो गंगानाथो गिरां पतिः ।
गंगाधरो पात्रधारी भस्मभूषित - विग्रहः ॥७१॥
मृगधरधरो मृगपतिर्मृगाक्षो मृगवेषधृक् ।
मेघनाथो मेघरवो मेघ - गंभीरविस्वनः ॥७२॥
अग्रनाथो जयनाथो मध्यनाथो तपेश्वरः ।
जलनाथो जगन्नाथो गंगानाथो जनाधिपः ॥७३॥
भूतनाथोऽवनीनाथो सुनाथो भुवनेश्वरः ।
दिगीश्वरो दिगम्बरो दिव्याभरण विभूषितः ॥७४॥
भूर्देशश्च भुवोदेशो भूपतिर्भूतिसम्भवः ।
गोपतिर्गोपिकाकान्तो गोपो गोपारि-मर्दनः ॥७५॥
यज्ञनाथो वायुनाथो विश्वनाथो जितेन्द्रियः ।
अपानाथो ऋद्धिनाथो नाथो नाथस्य रूपवान् ॥७६॥
विद्यापतिर्मन्त्रनाथो ध्याननाथो निरंजनः ।
नित्यनाथो भूतपतिर्नित्यानन्दो महापतिः ॥७७॥
सिद्धनाथो वृद्धनाथो, वृद्धो वृद्धगति प्रियः ।
विद्यानन्दो खेचरानन्दो, भूनाथो भुवनप्रियः ॥७८॥
सर्वाराध्यो पूर्णनाथो, द्युतिनाथो श्रुतिप्रियः ।
सृष्टिनाथो स्थितिनाथो, प्रलयनाथो महागुरुः ॥७९॥
संहारनाथो शंखनाथो, दिव्यनाथो दिवाप्रियः ।
अंगनाथो रंगनाथो, मंगलो मंगलेश्वरः ॥८०॥

अवासो विधृतिनाथो, वपुर्गोप्ता गुहाश्रयः ।
अकारोंऽगनाथश्च, साधुरात्मपरायणः ॥८१॥
इकारस्तु इन्द्रनाथश्चैकारस्तु इन्द्र यतिस्तथा ।
उकारो ॐ स्वरूपश्च, सुनाथो, नाथ भैरवः ॥८२॥
ऋकारः शृंगनाथश्च, लृकारो वृद्धिवर्धनः ।
एकारस्त्वेकनाथो वै, ह्येकभूति स्त्रिलोचनः ॥८३॥
एकारौकाररूपेण सिद्धौ ब्रह्ममहेश्वरौ ।
एकस्त्वमेकदानित्यो नित्यमेव दिगीश्वरः ॥८४॥
अकारोऽपि विश्वरूपः स्यादुकारो ब्रह्म उच्यते ।
मकारो भवरूपः स्याद् भुवनत्रय - रक्षकः ॥८५॥
एतत्पंच महत्तत्वमिन्द्रासनसमप्रभम् ।
ऐमंत्रधारी वाहीशस्त्वैकारैकनाथसेवितः ॥८६॥
ऐं रूप इद्रनाथस्त्वों सिद्धस्त्वौं च रूपवान् ।
ओकारो ब्रह्मरूपी स्यात् दिव्यरूपी तथैव च ॥८७॥
रुद्ररूपमयः साक्षादोंकारस्त्रिविधः स्मृतः ।
गोरक्षो विधिरूपः स्याद् विष्णुरूपी तथैव च ॥८८॥
गोरक्षो रुद्ररूपः स्यात् सत्यमेव न संशयः ।
अगम्यागमनात्पूतो, सुरापानात् तथैव च ॥८९॥
ओंकारो भू-स्वरूपश्च, विश्वव्यापी निरंजनः ।
ओं कल्मष-पापकर्मभ्यः शुद्धो भवति मानवः ॥९०॥
योगी गोरक्षको ब्रह्म-विष्णु-रुद्र स्वरूपवान् ।
ककारो ब्रह्मवर्णश्च, करवीरसुखासनः ॥९१॥
नाना चन्दन लिप्तांगः, काश्मीरज-* चन्दन प्रियः ।
कस्तूरी मृगचर्मी च, कस्तूरी तिलकप्रियः ॥९३॥

---

*काश्मीरज—केसर ।

रक्तचन्दन-लिप्तांगो, रक्तचन्दन-पूजितः ।
रक्तचन्दनधारी च, रक्तचन्दनभूषणः ॥९३॥
जयानन्दो दीर्घचरो जयानन्दविवर्जितः ।
खकारो खंखनाथश्च खं खोदरी गुणाश्रयः ॥९४॥
खंवर्णो खर्वहस्तश्च खंखानाथो महेश्वरः ।
गंगानाथो गिरांधारी गंगामतिः सुरेश्वरः ॥९५॥
गंगणो गणनाथश्च गंगासेवी गुरुप्रियः ।
घंघानाथो गघनाथो घंघनाथो घनाघनः ॥९६॥
घस्मनाथो महानाथो घोरनाथो घनाकृतिः ।
ङङनाथो सुनाथश्च कवीशः कवितापतिः ॥९७॥
ऋद्धि-सिद्धि-सुफलधारी वृद्धिनाथो विभावसुः ।
चं चं चं चं सुनाथश्च चारुरूपश्चराचरः ॥९८॥
चारुशृंगी चारुनाथश्चित्रनाथश्चिरं तपः ।
शक्तिनाथो क्षितिनाथो, योगनाथो गुणाश्रयः ॥९९॥
छत्रधारी छत्रपतिः, छत्रछत्रगुणाश्रयः ।
जयाधीशो जरानाथो जयदाता जनेश्वरः ॥१००॥
झखंनाथः झंखनाथो झ-सरूपी झराझरः ।
झों स्वरूपी च झंकारो किंस्वरूप नमोस्तुते ॥१॥
ञोंकार इन्द्रनाथो वै जै-जैरूपधरः सुधीः ।
जांजीत्रकार-सेवी च जकारेश नमोऽस्तुते ॥२॥
टंकारी टंटनाथश्च टंटेश्वर-समन्वितः ।
टंटाकारी टंटरागी च टंटेश्वर-समन्वितः ॥३॥
टकारो टंटनागश्च टंटयोगी वरप्रदः ।
ठः ठः ठाठोजघोनाथो ठंठनाथ नमोस्तुते ॥४॥

डंडधारी डंडनाथो डंडशब्दो डडोगुणः ।
डंडमाश्रित्य आचारो डंडनाथ नमोस्तुते ॥५॥
ढंढाहारी ढंढसिद्धो ढंढपृष्ठोऽतियोगजित् ।
ढकारो ढकनाथश्च ढंढयोगजयी यती ॥६॥
णकारो णंणनाथश्च णकारोंकाररूपकः ।
णकारो तंदीनाथश्च तंदीनाथजपेश्वरः ॥७॥
तंदीनाथो गुणैः स्तुत्यो तंदीनाथ नमोस्तुते ।
थकारो थंथकाधारो थं स्तुतिस्थंथथोपमी ॥८॥
थो थो थो थ थरीनाथो थं थ-शब्द समीकुलः ।
दंकारो दंदनाथो वै दं दोदरक्षयापहः ॥९॥
दानदो दानदाता च दान-सिद्धि-समन्वितः ।
दिव्यसिद्धिकरो, दिव्यो दिव्यासनो दिवासनः ॥२०॥
धीमान् धीधरो धाता, धराधीशो धरातिगः ।
धूपनाथो धराध्यक्ष्यो धीमतिर्धार्मिको धरी ॥११॥
धों धोंकारधरोधीरो ध्वान्तनाथो धनाधिपः ।
सिद्धान्तकृच्छुद्धमतिः, सिद्धयुक्तस्त्वभयकरः ॥१२॥
अन्धकारहरो धीमान्, धर्मिष्ठो धर्मपोषकः ।
नमस्कारप्रियो नाथो, नर-स्तुत्यो निरंजनः ॥१३॥
नित्ययोगरतो नित्यो, नन्दीनाथ नमस्तु ते ।
पांडिनाथो पीतवर्णः पन्नगमाल - भूषणः ॥१४॥
पांडुरः पांडुहापीतः, पन्नगासनसंस्थितः ।
पन्नगाधिपधारी च, पन्नगेन्द्रविभूषणः ॥१५॥
स्फटिकवर्णसंकाशः, फणीन्द्रकृतभूषणः ।
फं फं फंकारधारी च, फंस्वरूपी सदाफणी ॥१६॥

फकार सिद्धि-दाता च, फलनाथो फलाधिपः ।
बंबंनाथो बकारश्च, वामनो वरुणालयः ॥१७॥
बटुनाथो वराधीशो, वामनाकृतिपूजकः ।
वरुणो वारुणीनाथो, वराहभक्ति तत्परः ॥१८॥
भवानीपूजको भौमो, भद्रासनप्रसेवकः ।
भद्रप्रियोऽर्भकानन्दो, भद्राकृति - समन्वितः ॥१९॥
भवप्रियो भवाधीशो, भवानीपति - सेवकः ।
महादेवप्रियः श्रीमान्, महापातकनाशनः ॥२०॥
महाधीरो महायोगी, महासिद्धो महाश्रयः ।
मनोभवो मनस्वी च, महाह्लदनिभाश्रयः ॥२१॥
मार्गप्रियो मार्गक्लेशी महादेवाधिपालितः ।
मध्यनाथो महानाथो महाभैरवपूजकः ॥२२॥
यकारोपासना - नाथो, यज्ञकर्त्ता यमप्रियः ।
यशोधरो यशस्वी च, यवारस - समन्वितः ॥२३॥
यज्ञप्रियो योगयुक्तो, यज्ञपुरुष - सेवकः ।
यज्ञार्थकृद् यथायोगी, यथाकाल प्रसेवकः ॥२४॥
यथापराधदंडज्ञो, यथानीतिप्रवर्तकः ।
रमणो रामभद्रे च, रामनाथो जनार्दनः ॥२५॥
रं रं रवो रा महा रो रामाराधन-तत्परः ।
रागप्रियो रागवेत्ता, रागज्ञान - विभावनः ॥२६॥
राज्यकर्त्ता राजसेवी, राजनीति-विशारदः ।
अग्निनाथो रणाधीशो, सदास्थितिकरो गुणी ॥२७॥
ललाकारो ललानाथो, लम्बोदरो लयाश्रयः ।
लं लं नाथो लिंगरूपी, लीला - गुणसमन्वितः ॥२८॥

लकारो ललितासेवी, लावण्याकृतिसंयुतः ।
वायुदो वायुसेवी च, वाताहार-समन्वितः ॥२९॥
वायुसिद्धो वायुनाथो, वकाराधारतत्परः ।
वकारो बिल्वधारी च, बिल्वनाथो महीपति ॥३०॥
नीतिज्ञो नीतिकारश्च नैऋत्य-स्थिति-सम्भवः ।
शांभव - मंत्रधारी च शांभवयोगकारकः ॥२१॥
शांभवनाथनाथश्च शंकराराधको वरः ।
शिवभक्ति - युतः शैवः, शैवभक्तिसमन्वितः ॥३२॥
वामदेवप्रियः शूरो वरुणानाथोजपेश्वरः ।
षंथासनः षंथधारी षंथासननिविष्टितः ॥३३॥
षं तं तं तपोधारी षंथासनो दिगीश्वरः ।
षंथाराजो महाराजो षण्मुखः कीर्तिवर्द्धनः ॥३४॥
षण्मातुरकृताशक्तिः शंश्यानो योगीनां वरः ।
शक्ति - रंजितसंसारी सरीसारः सनातनः ॥३५॥
सीमन्तधारी सोमेशो सेवाफल - प्रदायकः ।
समशीलशमाकारः सर्वानन्दप्रदायकः ॥३६॥
सुसुखी सुखकरः सौम्यः सौम्यकीर्तिः सुपुण्यभाक् ।
हंसस्वरो हंसनाथो हविर्भुक् होमसाधनः ॥३७॥
हिरण्यरेताः सेवी च हिमद्युतिर्हिमवत्-शुचिः ।
हर्षनाथो हयग्रीवो हं हं योगधरः वशी ॥३८॥
हिरण्यकान्ति - संकाशो हिरण्यसृग्विभूषणः ।
ज्ञानज्ञो ज्ञानवान् ज्ञानी ज्ञानगम्यो महेश्वरः ॥३९॥
क्षेमकरः क्षमाशीलः क्षमाराशिः क्षमापतिः ।
क्षमानाथः क्षमारूपी अक्षयानन्द - वर्द्धनः ॥४०॥

क्षत्रियपूजितः क्षीणो कल्मष-कुल-नाशकः ।
क्षमाधरः क्षमाधारी क्षमायोग-प्रशोभितः ॥४१॥
कामदः कमलारूपः कमनीयवपुर्धरः ।
कान्तिधरः कलानाथः कुलकान्तिविवर्द्धनः ॥४२॥
तंत्रज्ञस्तंत्रवेत्ता च तंत्रधारण-तत्परः ।
गूढ़ो गूढ़ाश्रयो गोप्ता गोपतिर्गोपतिपतिः ॥४३॥
श्रुतिधरो महामूर्तिः शुभ्रासनविराजितः ।
धवलो धूसरो युक्तो धर्मवान् पुण्यवर्धनः ॥४४॥
क्षं क्षं रूपी क्षमाकरः कमलाकर ईश्वरः ।
गोरसो गोरसाधीशो गोसिद्धो गोमतिप्रियः ॥४५॥
गोरक्षनाथमंत्रस्य साधनं भुवि ये नरः ।
कुर्वन्ति सिद्धिकामास्तु सफलाः स्युर्न संशयः ॥४६॥
लम्बायोगं समाश्रित्य सर्वयोगीश्वराधिपः ।
विख्यातस्त्रिषु लोकेषु गोरक्षः पुण्यकीर्तिभाक् ॥४७॥
मंत्रं गोरक्षनाथस्य योजयन्ति दृढ़व्रताः ।
मृत्युदुःखजरारोगा न बाधन्ते कदापि तान् ॥४८॥
नानारूपधराः सिद्धा नाना-लिंग-विराजिताः ।
नाना-भाव-समाकीर्णा नानारागविभूषणाः ॥४९॥
तन्मंत्रप्रसादेन गोरक्षोऽभूत् सदा यतिः ।
महासिद्धो महायोगी नाना-मंत्र-विचक्षणः ॥५०॥
इदं स्तोत्रं महद् रम्यं नानापुण्यविवर्द्धनम् ।
सर्व-पाप-प्रशमनं सर्वोप द्रव-नाशनम् ॥५१॥
गोरक्षकीर्तितं जातं गोरक्षस्यातिप्रियम् ।
नानाभीतिहरं नित्यं नानाविघ्न-विनाशनम् ॥५२॥

नाना मंत्रसमाकीर्णं नानादेवविराजितम् ।
पठितव्यमिदं स्तोत्रं मंत्रसाधनकर्मणि ॥५३॥
यः पठेत्पाठकस्स्तोत्रं भक्ति-ज्ञान-समन्वितः ।
स वाग्मी च कविर्विद्वान् सर्वसिद्धीश्वरो भवेत् ॥५४॥
गोरक्षनाथमंत्राणां फलं च स्तुतिसंभवम् ।
वक्तुं न शक्यते कृष्ण, वर्षकोटि-शतैरपि ॥५५॥
फलं स्वस्तिमयं स्वल्पं तव स्नेहात्प्रकीर्तितम् ।
तदाप्तव्यं त्वया भक्तया दातव्यं सिद्ध-योगिने ॥५६॥
जन्मान्तरसहस्रेण मानवैर्यन्न लभ्यते ।
तद्धि गोरक्षमंत्रेण लभते दिव्यं फलं नरः ॥५७॥
प्रातःकाले पठेद् यस्तु गोरक्षस्तोत्रमुत्तमम् ।
लभेत वांछितान्कामान् स नरः सुखवान् भवेत् ॥५८॥
मध्याह्ने यः पठेद् योगी सर्वकामान् स आप्नुयात् ।
सायंकाले पठेद् यस्तु सर्वसिद्धीश्वरो भवेत् ॥५९॥
लक्ष्मीं च लभते नूनं निश्चलां राजवर्द्धिनीम् ।
कवितां पुत्रपौत्रांश्च सर्वत्र विजयी भवेत् ॥६०॥
इदं स्तोत्रं पठेन्नित्यं श्मशाने च विशेषतः ।
देवालये पठेद् यस्तु विधिना न्यासपूर्वकम् ॥६१॥
पापानि तस्य नश्यन्ति कृतानि मनसापि हि ।
गोरक्षनाथसिद्धस्य कीर्तनात् सिद्धिमुत्तमाम् ॥६२॥
षण्मासे लभते योगी नात्र कार्या विचारना ।
यं यं चिन्तयेत्कामं तं तं प्राप्नोति निश्चितम् ॥६३॥
सिद्धिभाक् मानवो नित्यं गोरक्षस्य प्रसादतः ।
गोरक्षस्य स्तुतिं कृत्वा भवन्ति वशगा नृपाः ॥६४॥

नराणां पुण्यशीलानां सर्वत्र विजयो भवेत् ।
इदं स्तोत्रं पठेद् यस्तु त्रैलोक्यं वशमानयेत् ॥६५॥
षण्मासान्मानवः शीघ्रं श्रुत्वा वागीश्वरो भवेत् ।
सर्वकार्याणि सिध्यन्ति गोरक्ष-प्रसादतः ॥६६॥
एवं नाम-सहस्रं वै गोरक्षस्य महाप्रियम् ।
कथितं गर्गमुनिना श्रीकृष्णस्य प्रीतिकारणात् ॥६७॥
यानपि कामयेत् कामान् भूपालः क्षितिमंडले ।
सिध्यन्ति तानि कार्याणि गोरक्षस्य प्रसादतः ॥६८॥
घटस्थापनकार्याणि गोत्रकार्यं विशेषतः ।
विना गोरक्ष-मंत्रेण न कर्तव्यं कदाचन ॥६९॥
आगमोक्तानि कर्माणि वैदिकानि तथैव च ।
सर्वाणि गोरक्षमंत्रैस्तु सिध्यन्ति साधयेत्तथा ॥७०॥

इति श्रीकल्पद्रुम तंत्रे महासिद्धिसारे गर्गश्रीकृष्ण-संवादे निरंजनात्मकं 'गोरक्षसहस्रनाम' समाप्तम् ॥

ॐ श्री गणेशाय नमः ।

ॐ श्रीमद् योगीन्द्र गोरक्षनाथाय नमः ।

ॐ आत्मेति परमात्मेति जीवात्मेति विचारतः ।
त्रयाणामेकसंभूतिरादेशः परिकीर्तितः ॥१॥

[भावार्थः]

इति सिद्ध सिद्धान्त-पद्धतौ श्रीमद् योगीन्द्र-गोरक्षनाथनाथै-रादेश-शब्दार्थरुक्तः । तेषामयमभिप्रायः ।

सर्वोपाधिविनिर्मुक्त नित्यानन्त शुद्ध बुद्ध सच्चिदानन्द-स्वरूपात्मेति विचारतः ।

शुद्ध सत्वप्रधानमायोपाधिक सर्वज्ञत्व जगज्जन्मादिकर्तृत्वा-दिविशिष्टेश्वरः परमात्मेति विचारतः ।

मलिन सत्व प्रधानाविद्योपाधिकाल्पज्ञत्व सुखित्वदुखित्वेत्यादि विशिष्टो जीवात्मेति विचारत : ।

जीवेश्वरयोरुपाधि - परित्यागेन त्रयाणामात्मपरमात्मजी-वात्मानां एकसंभूतिः ऐक्य संभवनं ऐक्यमिति यावत् आदेश शब्दार्थः परिकीर्तितः कथितः इति ॥१॥

एक च मूले एक संभूतिपदेन एक ब्रह्मैव प्रतिपादितम् ॥ अद्वैतवादे द्वितीयाभावात् तथा च हस्ताञ्जलिशिरोनयनपूर्वकं आदेशकर्त्तुः शिष्यस्य स्वयं ब्रह्म रूप इति स्तुतिकरणे तात्पर्यः । स्तुतिश्च नमनपूर्वकैव भवति यो यं न नमति स तत्स्तुतिमपि न करोति । यथा रावणेन रामचन्द्राय नमनं न कृतं तत्स्तुतिरपि न कृता । महादेवं प्रति (तेन) नमनं कृतम्, तस्य स्तुतिरपि कृता । तथा चादेश इत्यत्र नमस्कारो नास्तीति न शंकनीयम् । नमस्कार पदार्थस्यादेशपदार्थान्तर्भूतत्वादि भावः । त्वमपि ब्रह्म-स्वरूप इति प्रत्यादेश कर्त्तुर्गुरोरादेशपदेन शिष्यं प्रत्युपदेशकरणे

तात्पर्यः । यत्र समानयोः परस्परमादेशस्तत्रोभयोः स्तुति-मात्रे तात्पर्यः । तात्पर्यवशाच्छाब्दबोधस्य सर्वसंमतत्वात् । सैन्धवमानये-त्यत्रैव यद् वादिश्यतेऽधिकारीजनात् तत् प्रतिपाद्यते परमार्थत्वेन महात्मभिरित्यादेशशब्देन ब्रह्मैव प्रतिपादितं भवति ।।

[भावार्थ हिन्दी भाषा में]

'सिद्ध सिद्धान्त' नाम ग्रन्थ में स्वामी गोरक्षनाथ जी ने यह आदेश-पद कहा है। इसका अभिप्राय यह है कि—

श्रीमद् योगियों के स्वामी गोरक्षनाथ जी कहते हैं कि आत्मा उपाधि-रहित, नित्य, अनन्त, शुद्ध-बुद्ध, सत्, चित् आनन्द रूप है, तथा—

शुद्ध सत्वगुण-प्रधान, मायारूप उपाधिवाला, सर्वज्ञ, जगत् के जन्म-स्थिति और लय का कर्त्ता, विशिष्ट ईश्वर, परमात्मा है, और

मलिन सत्वगुण-प्रधान, अविचाररूप उपाधिवाला अल्पज्ञ, सुख तथा दुःख से प्रभावित विशिष्ट जीवात्मा है।

माया, अविद्या रूप उपाधि को त्याग कर आत्मा परमात्मा, जीवात्मा की एक संभूति अर्थात् एक—रूपता को जानना—यही (गोरक्ष का) 'आदेश' है ।।१।।

वेदान्त दर्शन इसी द्वैत भावना को नकारता है। 'सर्वं खल्विदं ब्रह्म'—अर्थात् यह सारा ब्रह्मांड ब्रह्म रूप है। इस प्रकार उस 'मूलतत्व' की स्तुति करे। स्तुति सदा विनय-भावना अर्थात् नमस्कार-पूर्वक ही होती है। जो व्यक्ति जिस को नमस्कार करता है सो उसकी स्तुति भी करता है जैसे रावण ने शंकर को नमस्कार किया और उनकी स्तुति भी की। परन्तु रामचन्द्र

के प्रति न वह नतमस्तक हुआ, न उसने उनकी स्तुति की। गोरक्षनाथ जी के 'आदेश' में यद्यपि नमस्कार करने का निर्देश नहीं है क्योंकि उस भक्ति-भावना का अन्तर्भाव उस 'आदेश' में स्वयं विद्यमान है। श्री गुरु का यह आदेश शिष्य को लक्षित किया गया है। शिष्य भी ब्रह्म स्वरूप है। तो शंका हो सकती है कि गुरु तथा शिष्य दोनों ब्रह्म स्वरूप हैं, फिर एक का दूसरे को आदेश देने का अभिप्राय क्या है ?

तात्पर्य यह कि जैसे "सैन्धवमानय" (जा सैन्धव ले आ) ऐसे आदेश में एक द्विविधा पैदा हो सकती है कि सैन्धव (घोड़ा) लाया जाए अथवा सैन्धव (नमक) लाया जाए ? परन्तु इस भ्रम का निवारण आदेश देने वाले की तात्कालिक स्थिति से स्वयं ही दूर हो जाता है। जैसे कहीं जाने के लिए त्यार होने वाले व्यक्ति के इस आदेश को सुन कर यात्रा के लिए सहायक वाहन (घोड़ा) ही लाना उचित है और भोजन करते समय 'सैंधव' लाने के आदेश से मतलब नमक लाने से ही होता है।

इति श्रीमद् योगीन्द्र श्री गोरक्षनाथ द्वारा प्रणीत आदेश-निर्णय सम्पूर्ण हुआ।

श्री योगीन्द्र गोरक्षानाथाय नमः।

[अथ श्री गोरक्षनाथाष्टकम्]

ॐ श्रीमद्गोरक्षनाथं भव-भय-हरं भक्तोद्धारकं भू-प्रसिद्धम्,
त्रिकालज्ञं दयालुं स्वहृदयकमले चिन्तयन्त स्वरूपं।
योगीन्द्रेशं वरेशं निखिलजगदिदं प्रेक्षमाणं समक्षं,
योगाचार्यं च मुक्तं सकलगुण-निधिं सद्गुरूं तं नमामि।१।

[हिन्दी अर्थ]

श्री सद्गुरू (स्वामी) गोरक्षनाथ को नमस्कार करता हूँ, जो भव-भय को हरने वाले, भक्तों का उद्धार करने वाले, जगत में प्रसिद्ध हैं। जो अतीत, वर्तमान तथा भविष्य के जानने वाले हैं, दयालु हैं, तथा अपने हृदय-कमल में आत्म-चिन्तन करते हैं; जो योगीवरों में भी श्रेष्ठ हैं, वर-दाता हैं, तथा समस्त जगत् को देखने की क्षमता वाले हैं। जो योग के आचार्य हैं, योग-युक्त हैं तथा सकल गुणों का भण्डार हैं।

पद्माभांघ्रि सुगात्रं कमलकरतलं पद्मतुल्यास्यनेत्रम्,
प्रेक्ष्यं श्लाघ्यं सुहास्यं प्रकृति-विमलकं ध्यानयोगं प्रसन्नम्।
शान्तं दान्तं वदान्यं पशुपतितुल्यं योगसिद्धि-समेतम्,
साक्षाच्छम्भुं स्मरारिं स्फटिकमणिनिभं सद्गुरूं तं नमामि
॥२॥

जिनके चरणों की आभा (लाल) कमलों जैसी है, जो सुन्दर देह के स्वामी हैं, जिनके कर-तल कमल-सदृश हैं, जिनका मुख तथा नेत्र कमल जैसे हैं, जो दर्शन करने तथा स्तुति करने योग्य हैं, जिनकी हंसी मधुर है, जो स्वभाव से कोमल हैं, जो ध्यान करने योग्य हैं, प्रसन्न रहते हैं, जो शान्त रहते हैं, संयम वाले हैं, दयालु हैं, शंकर सदृश हैं और योग की सिद्ध वाले हैं, जो साक्षात् पशुपति हैं, जिन्होंने काम को जीत लिया है, जिनकी देह स्फटिक के सदृश है, उन सद्गुरु को नमस्कार करता हूँ।

इन्द्रोपेन्द्रार्क-चन्द्रश्वसन-दहनक-ब्रह्म-यक्षेशकालैः
सिद्धैर्नागैर्निखिल-सुरगणैर्दैत्यवर्यैश्च मुख्यैः।

स्वात्मारामैराप्तकामैः सकलमुनिगणैरात्मविद्भिः
पूज्यं वन्द्यं च ध्येयं तपनशतनिभं सद्गुरुं तं नमामि ॥३॥

इन्द्र, उपेन्द्र (विष्णु), सूर्य, चन्द्र, पवन, अग्नि, ब्रह्मा, यक्षों के स्वामी तथा काल (यम), सिद्ध, नाग समस्त देव-गण, दैत्यों के नेता, अपने आत्म-तत्व को जानने वाले, अपने चित्त में प्रसन्न रहने वाले तथा सकल सिद्धियों को प्राप्त किये हुए मुनि-गण, जिनकी पूजा और स्तुति करते हैं, उन ध्यान करने योग्य, सौ सूर्य सम प्रभाव वाले सद्गुरु को नमस्कार करता हूँ ॥३॥

खं वातोऽग्निः किलापः कुकुधरसगका नाग-गन्धर्व-यक्षाः,
सूर्यः सोमश्च तारा जलधिर्जलचरा भूचराः खेचराश्च ।
पातालस्था हि दैत्या स्त्रिभुवनगतं स्थावरं जंगमं च
तेषां हेतुं निमित्तं निजजन-सुखदं सद्गुरुं तं नमामि ॥४॥

जो सद्गुरु अपने (भक्त) जनों को सुख देने वाले हैं तथा जो आकाश, पवन, अग्नि, जल, पर्वत, नाग, गन्धर्व, यक्ष, सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र, सागर के, तथा जलचर (जीव), भूचर और खेचर (पक्षी आदि) के, और पाताल-स्थित जीवों के, दैत्यों के तथा त्रिभुवन में जो जड़-चेतन सृष्टि है— इन सभी के मूल कारण और निमित्त हैं, उन्हें नमस्कार करता हूँ ।

मोक्ष-स्थानं प्रधानं त्रिभुवनविदितं शान्तमूर्तिं सुमूर्तिम्
योगिध्येयं कवीन्द्रैः सुविमलमतिभिर्गीयमानं च नित्यम् ।
श्रुत्या स्मृत्या पुराणैः कपिलमुनिकृतैश्च योगमर्माभिधानैः
वेद्यं शुद्धं च बुद्धं निगमसुविदितं सद्गुरुं तं नमामि ॥५॥

जो (गुरु) मुक्ति-दाता हैं, (सभी योगियों में) प्रधान हैं, तीनों भुवनों में प्रसिद्ध हैं, शान्त हैं, सुन्दर हैं, योगी जिनकी आराधना करते हैं, विमल-मति कविवर जिनका नित्य स्तुति-गान करते हैं, वेद-स्मृति-पुराण तथा कपिल-मुनि कृत योगशास्त्र के द्वारा जो जानने योग्य हैं, जो शुद्ध हैं, बुद्ध हैं, तथा जो शास्त्रों में निष्णात हैं, उनको मैं प्रणाम करता हूँ ॥५॥

संसाराद्यं ह्यनाद्यं निखिल जगति व्याप्यमानं वियद्यत्,
तत्वं मुक्तं हि पूर्णं सुविमलमतिभिर्योगिभिर्ध्यानगम्यम् ।
संज्ज्ञानानन्दरूपं गगनसदृशं तत्वमस्यादिलक्ष्यम्
एकं नित्यं च रम्यं नयनसुभगं सद्गुरुं तं नमामि ॥६॥

जो संसार के आदि पुरुष हैं, जिनका आदि (मूल) दूसरा नहीं है, जो समस्त जगत् पर छाए हुये गगन-सदृश हैं, जो सत्य हैं, मुक्त हैं, पूर्व हैं, जो निर्मल-बुद्धि योगियों को ध्यान से जानने योग्य हैं, जो सत्य ज्ञान तथा सत्य आनन्द स्वरूप हैं, जो गगन सदृश हैं, 'तत् त्वमसि' ही जिनका लक्ष्य है, जो अद्वितीय हैं, नित्यं हैं, रमणीय हैं, नयनों को मुग्ध करने वाले हैं, ऐसे सद्गुरु को मैं नमस्कार करता हूं ।

विश्वाधारं च सारं किल विमलतरं निष्क्रियं निर्विकारम्,
लोकाध्यक्षं सुवीक्ष्यं सुरवरमुनिभिः स्वर्गमोक्षैकहेतुम् ।
स्वात्मारामममाप्तकामं दुरितविरहितं ह्यागमाज्ञा-विहीनम्
द्वन्द्वातीतं विमोहं विमलशशिप्रभं सद्गुरुं तं नमामि ।७।

जो (सद्गुरु) विश्व का आधार हैं, जगत् का सार हैं, जो निर्मल निष्क्रिय (कर्म-रहित) और विकार-रहित हैं, जो इस

भूलोक के स्वामी हैं, जो सुर मुनि गणों के लिए भी दर्शन करने योग्य हैं, जो स्वर्ग और मोक्ष के हेतु हैं, जो अपने आप में प्रसन्न हैं, जिन्हें सभी कामनाएं प्राप्त हैं, जो पाप से रहित हैं तथा जो आगमों (शास्त्रों) के आदेश से भी परे हैं, जिनके मन में किसी प्रकार का कोई द्वन्द्व (संघर्ष) नहीं है, जो मोह-रहित हैं, तथा जिनकी देहकान्ति शशिप्रभा तुल्य है, उन सद्गुरु को नमस्कार करता हूँ।

कर्तृत्वाद्यैः समस्तैः कमलमुकल-वन्नाभिलिप्तं सुतृप्तम्,
साक्षीभूतं हृदिस्थं सकलकरणकेशं किलानन्तरूपम्।
ज्योतोरूपं चिदाख्यं ह्यखिल-समदृशं शंकरं ब्रह्ममूर्तिम्
सर्वात्मानं निदिध्यासन-विधि-सुखगं सद्गुरुं तं नमामि।८।

जो सद्गुरु सभी कामों से इसी प्रकार निर्लिप्त रहते हैं जैसे जल में रहने वाला कमल (जल से निर्लिप्त रहता), जो तृप्त हैं, जगत् के साक्षी हैं, जो (सब के) हृदय में विराजते हैं, समस्त कारणों के जो स्वामी हैं, जो अनन्त (ईश्वर) के रूप हैं, जो ज्योति-स्वरूप हैं, जो चित् (चेतन) स्वरूप हैं, समस्त जीव जगत् को समदृष्टि से देखने वाले हैं, जो शंकर तथा ब्रह्मा जैसे हैं, जो सब में आत्मा की तरह हैं, तथा (योग की) निदिध्यासन विधि से जिनको पाना सुकर है, ऐसे सद्गुरु को मैं नमस्कार करता हूं।

इति श्रीमद्गोरक्षनाथाष्टकम्

श्रीमद्योगीन्द्र-गोरक्षनाथ-गीता सप्तश्लोकी

ॐ वेदा न लोका न सुरा न यज्ञा-
वर्णाश्रमो नैव कुलं न जातिः ।
न धूम्रमार्गो न च दीप्त मार्गो
ब्रह्मैकरूपं परमार्थतत्वम् ॥१॥

न वेद, न लोक (भुवन), न देव-गण, न यज्ञ, न वर्ण-आश्रम, न कुल, न जाति, न धुएं वाले मार्ग (यज्ञ आदि) तथा न दीप्त मार्ग; यदि कोई परमार्थ तत्व है तो वह एक अद्वितीय ब्रह्म ही है।

मूर्खोऽपि नाहं न च पंडितोऽहं
मौनं च वार्ता न च मे कदाचित् ।
तर्कं वितर्कं च कथं वदामि,
स्वरूप-निर्वाणमनामयोऽहम् ॥२॥

न मैं अज्ञानी हूँ, न ही पंडित (ज्ञानी) हूँ, न मैं मौन (में) हूं, न मेरे विषय में कभी व्याख्या की जा सकती है। तर्क-वितर्क से मेरा क्या सम्बन्ध ? मैं तो निर्विकार मुक्त स्वरूप हूं ॥२॥

न तस्य माता न पिता न बन्धु-
र्न तस्य पत्नी न च शत्रु-मित्रम् ।
न पक्षपातो न विपक्षपातः
कथं हि तृप्तो न च कामकामी ॥३॥

उस की न माता है, न पिता है, न कोई बन्धु-बान्धव है।

जिसके चरणों की वन्दना देवासुर करते हैं, जो गोरक्षनाथ का ही दूसरा रूप है, जिसने दया का सागर होने के कारण, इस धरती पर प्रगट होकर अपने भक्तजनों का उद्धार किया, जो सर्वज्ञ है तथा इस भुवन में जिस की कीर्ति की प्रभा फैली है, उस कल्याणकारी, शिवरूप गुरु मस्तनाथ को नमस्कार करता हूं ॥१॥

ॐ कार्यं यस्य न विद्यते पुनरहो ब्रह्माण्डभाण्डोदरे,
नादेयं न च हेयमस्ति नितरां, नो वै प्रियं नाप्रियम् ।
नाशोच्यं न च शोच्यमात्मविदुषो, नैवोत्तमं नाधमम् ,
तं वंदे सुरपूजितं सुरवरं, श्रीमस्तनाथं गुरुम् ॥२॥

इस ब्रह्माण्ड में जिस का पुनः आगमन नहीं होगा, अर्थात् जिन्हें कैवल्य प्राप्त हो चुका है, जिस के लिए इस संसार में लेने योग्य भी कुछ नहीं है, तथा हेय भी कुछ नहीं है, न कुछ प्रिय है और न कुछ अप्रिय, न कुछ ऐसा है जिस के प्रति उन्हें कोई चिन्ता हो, न कुछ ऐसा है जिस के प्रति उन्हें चिन्ता न हो, जिस आत्म-ज्ञानी के लिए न कुछ उत्तम है न अधम, उस सुरपूजित तथा स्वयं भी देवरूप गुरु मस्तनाथ को नमस्कार करता हूं ॥२॥

ॐ लोभातीतमतिं निजात्मनिरतं शान्त्यादि भूषांकितम् ,
सारासार-विचार-खड्गसुधरं, कामादिनाशं विभुम् ।
ध्यानावस्थितमानसं भयहरं, ज्ञानप्रदीपं प्रभुम् ,
तं वन्दे निगमार्थ-बोधनकरं, श्रीमस्तनाथं गुरुम् ॥३॥

जिन की मति लोभ से न्यारी है तथा जो आत्मचिन्तन में लीन रहते हैं, जो शान्ति आदि गुणों के भूषणों से सजे हुए हैं,

सार और असार का निर्णय करने वाली विचार की खड्ग को जो धारण करते हैं, जो काम आदि आत्म-शत्रुओं को पराजित करने वाले हैं, तथा जो वेदादि शास्त्रों के अर्थ का अववोधन करने वाले हैं, उन मस्तनाथ गुरु को प्रणाम करता हूं ॥९॥

मानामान - विवर्जितं परहितं स्वायत्तचेष्टं सदा,
संसारार्णवपारदं भवभिदं ज्ञानावधिं ज्ञानदं ।
निश्चिन्तं जनमध्य - संगरहितं ध्यानैकवृत्तौ पटुं,
तं वन्दे निरहङ्कृतिं समदृशं श्रीमस्तनाथं गुरुम् ॥४॥

जो मान-अपमान से ऊपर हैं, पर-उपकारी हैं, तथा जिन की सभी चेष्टाएं सदा आत्माधीन रही हैं, जो संसार-सागर को पार करने वाले हैं, जो भव (जन्म) का अन्त करने वाले हैं, जो ज्ञान की सीमा हैं तथा जो ज्ञान के दाता हैं जो सभी तरह की चिन्ताओं से मुक्त हैं, जो अहंकार से रहित हैं तथा समदृष्टि हैं, उन मस्तनाथ गुरु को नमस्कार करता हूं ॥४॥

कर्णाशोभितकुण्डलं शिरजटं, यज्ञोपवीतान्वितम् ,
भस्मांगं धृतमंगलं शशिनिभं विश्वैकशाभाधरम् ।
आशापाशविमुक्तशुद्धमनसं वैराग्यधाराधरम् ,
तं वन्दे भगवन्तमादिपुरुषंश्री मस्तनाथ गुरुम् ॥५॥

जिन के कानों में कुण्डल शोभते हैं, शिर पर जटाएं (शोभित) हैं, जो यज्ञोपवीत-धारी हैं, जिन की देह पर भस्म मली है, जो मंगल करने वाले हैं, जो चन्द्रमा-तुल्य हैं और विश्व में अलौकिक शोभा के स्वामी हैं, जिन का मन आशा के बन्धन से

मुक्त है, जो वैराग्य की धारा को धारण किए हैं, उस आदि पुरुष भगवान् गुरु मस्तनाथ को नमस्कार करता हूँ ॥५॥

ध्येयं योगविशारदैः प्रतिदिनं योगोत्सवैर्योगिभिः,
योगागं विधिपूर्वकं हि सततं जानन्तमानन्ददम् ।
सिद्धज्ञानी - शिरोमणिं पुनरहो सिद्धासने संस्थितम्,
तं वन्दे गगनादिभेद-रहितं श्रीमस्तनाथं गुरुम् ॥६॥

योग में पारंगत तथा योग-साधना को उत्सव समझने वाले योगी भी प्रतिदिन जिन्हें स्मरण करते हैं, जो योग के सभी अंगों के विधिपूर्वक अनुष्ठान की विधि को जानने वाले हैं, जो दूसरों को आनन्द देने वाले हैं, जो सिद्ध ज्ञानियों में शिरोमणि हैं, तथा जो सिद्धासन लगा कर रहते हैं, तथा जो (एक ब्रह्म की आराधना में लीन होने के कारण) आकाशादि भेदों से रहित हैं, उन श्री मस्तराम गुरु को मैं प्रणाम करता हूँ ॥६॥

नित्यानन्दकरं वराभयकरं भक्तानुकम्पाकरं,
शुद्धाच्छुद्धतरं समाधिनिपुणं ध्यानीयमूर्तिं परम् ।
पापादं भजनीयसुन्दरतनुं धर्मार्थकामप्रदं,
तं वन्दे परमेश्वरं शरणदं श्रीमस्तनाथं गुरुम् ॥७॥

जो सदा आनन्द करने वाले तथा जो भली प्रकार अभय दान देने वाले हैं, जो भक्तों पर सदा कृपालु रहते हैं, जो शुद्ध (गगन आदि) से भी शुद्धतर हैं, जो समाधि लगाने में सिद्धहस्त हैं, तथा जिन की (अपनी) मूर्ति ध्यान करने योग्य है, जो पाप का नाश करने वाले हैं, जिन का सुन्दर शरीर आराधना योग्य

है, जो धर्म, अर्थ तथा काम आदि फलों के दाता हैं, उन शरण-दाता, परमेश्वर-स्वरूप, गुरु मस्तनाथ को प्रणाम करता हूँ ॥७॥

संस्तुत्यं श्रुतिमस्तकैरनुदिनं तैरेव गम्यं भृशं,
कैवल्याधिपतिं विकार - रहितं कैवल्यदं केवलम् ।
भेदाभेदविहीनमौपनिषदं चिद्रूपिणं साक्षिणं,
तं वन्दे श्रुतिसारमेकमनघं श्रीमस्तनाथं गुरुम् ॥८॥

जो प्रतिदिन वेदतत्वविद् मनीषियों द्वारा स्तुति करने योग्य तथा जानने योग्य है, जो कैवल्य मुक्ति का स्वामी है, जो विकार-रहित है, जो कैवल्य मुक्ति का दाता है, जो अपने सदृश स्वयं ही है, जो भेद तथा अभेद से ऊपर है, तथा उपनिषदों का मर्मज्ञ, चेतन-रूप सर्वसाक्षी है, जो सभी श्रुतियों के सार का ज्ञाता, अद्वितीय तथा निष्पाप है, उस गुरु मस्तनाथ को प्रणाम करता हूं ॥८॥

रम्यं मौक्तिकनाथनिर्मितमिदं श्रीमस्तनाथाष्टकम् ,
भक्त्या ये नितरां पठन्ति मनुजाः शृण्वन्ति चादरात् ।
नो ते निर्गतकल्मषा यमपुरं स्वप्नेऽपि पश्यन्ति वै,
भुक्त्वा चात्र विचित्रभोगविभवं गच्छन्ति चांते शिवम् ।९।

श्री मुक्तानाथ द्वारा रचे गए इस सुन्दर मस्तनाथ-अष्टक को जो साधक भक्तिपूर्वक पढ़ते हैं तथा आदर-पूर्वक सुनते हैं, वे पाप-रहित प्राणी, स्वप्न में भी यमपुर को नहीं देखते । वे इस धरती पर अनुपम सुख-भोगों का आनन्द लेकर, अन्त में शिवलोक को प्राप्त होते हैं ॥९॥

श्री गोरखनाथ की आरती

ॐ जय गोरक्ष देवा, स्वामी जय गोरक्ष देवा
सुर नर मुनि जन सेवत, सिद्ध करत सेवा,
स्वामी, सन्त करत सेवा ।
सुर नर सुनि जन सेवत, सिद्ध करत सेवा ।

जोग जगत जानत, मानत ब्रह्मज्ञानी, स्वामी, मानत ..
सिद्ध सिरोमणि राजत, शोभित गुरुज्ञानी ।
जय गोरक्षदेवा ॥१॥

ज्ञान-ध्यान के धारी, सब के सुखकार, स्वामी, सब के ..
गो-पाल गो-रक्षक, राखत सुध सारी ।
जय गोरक्षदेवा ॥२॥

रमते सकल जग मांहि, छाया है नांही, स्वामी, छाया...
सब घट गोरक्ष व्यापक, सो लख मन माहीं ।
जय गोरक्षदेवा ॥३॥

कानन कुंडल छाजत, राजत रवि चन्दा, स्वामी, राजत...
बाजत सींगी नादा, भाजत दुख-द्वन्दा ।
जय गोरक्षदेवा ॥४॥

भस्म लसत अंगे, जरणा है संगे, स्वामी, जरणा...
ज्ञान उचारत, जोग विचारत,
जानत जोगी बहुरंगे । जय गोरक्षदेवा ॥५॥

कंठ विराजत सेली, सींगी सुख बेली, स्वामी, सींगी...
भगवा चोला सोहे, गीरवा कंथा सोहत,
ज्ञान रतन थैली..... जय गोरक्षदेवा ॥६॥

निद्रा मारत, काल संहारत, संकट के बैरी, स्वामी, संकट...
कर किरपा सन्तन पर, कर किरपा भक्तन पर,
शरणागत तेरी..... जय गोरक्षदेवा ॥७॥

सिद्धासन पद्मासन भद्रासन साजें, स्वामी, भद्रासन...
त्रिकुटी ध्यान लगावत, अनहद बाजें।
जय गोरक्षदेवा ॥८॥

पूरक कुम्भक रेचक प्राणायामा, स्वामी, रेचक...
निसदिन करत रहत हैं सब प्रणामा।
जय गोरक्षदेवा ॥९॥

नेती, धोती, बस्ती, त्राटक, नौली, स्वामी, त्राटक...
कपाल भाती उत्तम षटक्रम कृत मौली।
जय गोरक्षदेवा ॥१०॥

उत्मनी, शाम्भवी, खेचरी मुद्रा के कर्त्ता, स्वामी, मुद्रा...
ताप त्रय के हर्त्ता, सब जग के भर्त्ता।
जय गोरक्षदेवा ॥११॥

सूरज भेदन, सीतली सीत कारी, स्वामी, सीतली...
भस्ना, भ्रामरी, मूर्च्छा भये पलावनी कुंभकारी।
जय गोरक्षदेवा ॥१२॥

अष्टसिद्धि अणिमादिक, नव निधि के दाता, स्वामी, नव...
भवसागर के नाशक, भक्तन के त्राता।
जय गोरक्षदेवा ॥१३॥

अनन्त कोटि सिद्धन के स्वामी, हे अन्तर्यामी, स्वामी, हे...
ज्ञान-ध्यान के सागर, सकल भुवनगामी।
जय गोरक्षदेवा ॥१४॥

क्षुधा-पिपासा व्यापे नहिं, जरा-मरण मारे, स्वामी जरा...
शोक-मोह कबहुं नहिं होते, रहत सदा न्यारे।
जय गोरक्षदेवा ॥१५॥

शान्तरूप जोती स्वरूप, करमन के वासी, स्वामी, करमन...
प्रतिदिन रहत समाधि, सब जग के भासी।
जय गोरक्षदेवा ॥१६॥

तुम ही ब्रह्मा, तुम ही विष्णु, तुम ही हो ईशा, स्वामी, तुम...
तुम ही शक्ति गणेशा, तुम ही हो शेषा।
जय गोरक्षदेवा ॥१७॥

तुम ही इन्द्र उपेन्द्रा, तुम ही धन ईशा, स्वामी, तुम ही...
तुम ही हो चन्द्रा, तुम ही ग्रह-ईशा।
जय गोरक्षदेवा ॥१८॥

दीनबन्धु, करुणा के सिन्धु, बहु नृप-जन प्यारे, स्वामी, बहु...
काल की गति सब जाने, माया से न्यारे।
जय गोरक्षदेवा ॥१९॥

सत् चित आनन्दा, निर्गुण निष्कामा, स्वामी, निर्गुण...
निर्विकार विभु अनन्ता, मुक्ति के धामा।
जय गोरक्षदेवा ॥२०॥

इति श्री गोरक्षनाथ की आरती, जो चित कर गावै,
जपत श्री रामचन्द्र, वांछित फल पावै।
॥ जय गोरक्षदेवा ॥

डोगरा प्रिंटिंग प्रेस, कच्ची छावनी जम्मू (तवी)।